Knowledge Consortium of Gujarat
Department of Higher Education - Government of Gujarat
Journal of Social Science - ISSN : 2279-0268

Continuous issue-26 | April – May 2017

प्रजातांत्रिक विकन्द्रीकरण और मीडियाः गांधी विचार के आलोक में एक विश्लेषण

यह लेख तीन प्रमुख भागों में विभाजित है। पहले भाग में प्रजातांत्रिक लोकलक्षी अभिगम को समझने का प्रयास किया गया है, तदानुरूप इस व्यवस्था को असरकारक बनाने में मीडिया की भूमिका को प्रस्थापित किया गया है। दूसरे भाग में प्रजातंत्र और मीडिया के संदर्भ में वर्तमान स्थिति एवं इसके लिए जिम्मेदार कारणों का विश्लेषण किया गया है तथा तीसरे अंतिम भाग में इस व्यवस्था को अपने मूल स्वरूप में टिकाए रखने हेतु गांधी विचारों की प्रासंगिकता का निरूपण किया गया है।

"पूर्ण स्वराज का अर्थ है भारत के नर कंकालों का उद्धार। पूर्ण स्वराज ऐसी स्थिति की द्योतक है, जिसमें गूंगे बोलने लगते हैं और लंगड़े चलने लगते हैं।"- महात्मा गांधीजी, यंग इंडिया-26.3.31,पृष्ठ-51

प्रजातंत्रः एक लोकलक्षी अभिगम.........

प्रजातंत्र के अर्थ को उपरोक्त वर्णित वाक्य के संदर्भ में समझा जा सकता है जो स्वराज के मकसद को प्रस्थापित करता है। प्रजातंत्र का बहुचर्चित सामान्य अर्थ है लोगों का राज्य जिसे लोगों द्वारा लोक कल्याण के लिए रचा गया हो तथा जिस पर लोगों का नियंत्रण हो। कहने का आशय यह है कि प्रजातंत्र वह व्यवस्था है जिसमें शासन संचालन व्यवस्था आमजन के अधीन रहती है। सच्चा प्रजातंत्र लाने के लिए लोगों को इसके लिए तैयार करने की आवश्यकता है ताकि इस व्यवस्था से जुड़े सभी अवयव सक्रिय बन सकें और अपनी रचनात्मक भूमिका सुनिश्चित कर सकें। तभी प्रजातांत्रिक विकेन्द्रीकरण के स्वप्न को साकार किया जा सकता है और समाज के अंतिम छोर पर रहने वाले व्यक्ति की पहुँच उनके अपने लोकतंत्र तक बनाई जा सकती है। मीडिया वह है जो समाज के सामने वस्तुस्थित को रखकर प्रजातंत्र के मूल्यों को बनाए रखने की दिशा में लोक-जागृति के यज्ञ में अपनी आहूति देने के लिए तत्पर रहता है और प्रजातांत्रिक विकेन्द्रीकरण की बुनियाद को मजबूती प्रदान करता है। प्रजातांत्रिक विकेन्द्रीकरण लोक सत्ता का वह स्वरूप है जिसमें सभी लोगों को प्रजातंत्र की रचना व संचालन व्यवस्था में समान सहभागिता के अवसर उपलब्ध हों जिसमें हर व्यक्ति संचालन व्यवस्था का अंग बनकर अपनी भूमिका निभा रहा हो अथवा तंत्र को बनाने में अपने योगदान को सुनिश्चित कर रहा हो इन दोनों पक्षों के लोगों में प्रजातांत्रिक मूल्यों के प्रति निष्ठा व समर्पण होना जरूरी है, कर्तव्य बोध जरूरी है जो किसी भी प्रकार की स्वार्थप्रेरित ताकतों के सामने न तो झुकना चाहिए और न ही लालच के वशीभूत होकर डगमगाना चाहिए। प्रजातंत्र को सही मायनों में किसी सेवा यज्ञ से कम नहीं आंका जा सकता। क्योंकि इसके ऊपर राष्ट्र की अस्मिता, जरूरतमंद का अस्तित्व एवं अहिंसक समाज रचना का दारोमदार टिका होता है। प्रजातंत्र लोकहित के विरुद्ध कोई समझौता नहीं कर सकता।

भारतीय प्रजातंत्र विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्र है। प्रजातंत्र वह है जिसमें आमजन के हाथ मजबूत होते हैं, जहाँ निर्णयन प्रक्रिया में समाज के अंतिम छोर पर रहने वाले व्यक्ति की समान सहभागिता होती है, जिसमें लोगों के शासन की बागडोर लोगों के हाथ में होती है और जिसका मकसद जरूरतमंदो को केन्द्र में

रखकर इस तरह स्वशासन की व्यवस्था का संचालन किया जाता है कि प्रजातंत्र की हर इकाई अहिंसक समाज रचना के निर्माण में अपनी सक्रिय व सकारात्मक भूमिका सुनिश्चित कर सके।

लोकतांत्रिक सभ्यता- लोकतांत्रिक सभ्यता के सामान्य मायने हैं कि वह तंत्र जो मानवीय मूल्य आधारित 'तत्व' पर संचालित होता हो, जिसमें सभी लोग चाहे वे शासक हों या शासित दोनों ही परस्पर ऐसा व्यवहार करने के अभ्यासी हों जो वह दूसरों से अपने लिए चाहते हैं। लोक शासक व शासित दोनों ही पक्षों से यह सदैव अपेक्षित है कि वे ऐसा व्यवहार या आचरण कतई न करें जिससे लोकतंत्र को क्षति पहुँचती हो। फिर चाहे लोकतंत्र में प्रत्यक्ष सहयोग की बात हो या परोक्ष सहकार की दरकार हो, हर एक इसके लिए तैयार रहना होगा और जरूरत के मुताबिक अपनी क्षमताओं का विकास भी करना होगा तभी लोकतंत्र सुव्यवस्थिति रूप से पुष्पित-पल्लिवत होसकता है। आज एक तबका जो खुद को पढ़ा लिखा मानता है और राजनैतिक गंदगी की बात करता है, वर्तमान की कटु आलोचना करता है किन्तु जब उससे उस भूमिका में आने के लिए कहा जाता है अथवा मतदान के समय उससे विवेकपूर्ण व्यवहार की अपेक्षा की जाती है तो वह शुषुप्त बन जाता है या नकारात्मक व अड़ियल रवैया अपना लेता है। यह सही नहीं है क्योंकि केवल विरोध मात्र से लोकतांत्रिक मूल्यों का संरक्षण नहीं किया जा सकता अपितु उसके लिए सक्रिय रचनात्मकता व सीधी भागीदारी जरूरी है। मीडिया इस दिशा में तृणमूल स्तरीय प्रयासों के जरिये आमूलचूल परिवर्तन ला सकता है भले ही उसके परिणामों की दिशा धीमी हो किन्तु गुणात्मक परिप्रेक्ष्य में यह आगाज स्थायी रूप मानवीय चेतना को झकझोर सकता है। आज इसी परिप्रेक्ष्य में मीडिया की भूमिका को विश्लेषित करने की नितान्त आवश्यकता है।

मीडिया एवं लोकतंत्र- मीडिया लोकतंत्र का एक सजग प्रहरी है, मीडिया आम आदमी की आवाज है, राष्ट्र हित के आगाज की वह शक्ति है जो एक तरफ देश के कर्णधारों को उनकी स्थापित भूमिका के निर्वाह के प्रति जागृत बनाए रखती है तथा दूसरी तरफ आमजन को विकास प्रक्रिया में जुड़ने के लिए सतत प्रेरित करती रहती है ताकि समाज के समस्त घटक स्वयं के प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति और समस्त सृष्टि के प्रति अपने कर्तव्यों को समझें तथा विवेकपूर्ण तरीके से उनका निर्वाह करते हुए प्रजातंत्र के सच्चे अर्थ को सार्थक करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान सुनिश्चित करें। मीडिया में वह ताकत है कि वह अपने प्रभाव से लोगों के रुझान को परवर्तित कर दे। मीडिया की निष्पक्ष व सकारात्मक भूमिका वरदान स्वरूप होती है जबकि छद्म स्वार्थपूर्ण, दबाव सहित भूमिका लोकतंत्र को दिशाभ्रमित कर अभिशाप बन सकती है। अतः मीडिया की नीतिमत्ता व अपनी शक्ति के विवेकपूर्ण उपयोग की मनोवृत्ति व निष्ठा पर ही लोकतंत्र की क्रांति निर्भर है। यह बदलाव अहिंसक समाज रचना की दिशा में हो इसके लिए आवश्यकता इस बात की है कि मीडिया बिना किसी दबाब में आए, लोक हित में निडरता व निष्पक्षता के साथ समाज के साथ वस्तु स्थिति को रखे, स्वच्छ संवादिता व स्वस्थ विमर्श का वातावरण बनाए। यदि यही मीडिया क्षणिक अल्पकालीन लाभ या महत्वाकांक्षाओं की संतुष्टि हेतु सत्ता लोलुपियों के हाथ की कठपुतली बन जाता है तो मीडिया की वास्तविक उपादेयता लक्ष्य से भटक जाती है और इसकी भूमिका पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है। मीडिया का एक स्वार्थपरक कदम समाज व राष्ट्र को कई दशक पीछे ले जा सकता है जिसका हर्जाना लोकतंत्र को भुगतना पड़ता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य- वर्तमान में यदि हम लोकतंत्र की स्थिति और मीडिया की भूमिका की फलश्रुति पर नजर डालें तो हमें मीडिया की भूमिका के वरदान व अभिशाप दोनों ही स्वरूपों दर्शन होते हैं। दोष मीडिया तंत्र का नहीं अपितु उससे जुड़े लोगों की नीतिमत्ता का है, जो अपनी भूमिका के साथ न्याय नहीं कर पाते और मीडिया तंत्र का उपयोग अपनी महत्वाकांक्षाओं की सिद्धि हेतु करने पर आमादा है इसलिए उन्हें लोकतंत्र के

संरक्षण व सुचारु संचालन के लिए आवश्यक घटक नैतिकता, मानवीय संवेदनशीलता और सर्वांगीण परिप्रेक्ष्य आदि नजर नहीं आते जिन्हें वे स्वार्थ सिद्धि की लालच, स्व-प्रसिद्धि की लालसा तथा अर्थोपार्जन की अनथक होड़ उपार्जन की होड़ में जानबूझकर अनदेखा कर देते हैं। ऐसे लोग राष्ट्रीय हितों की बलि चढ़ाने और अपनी पेशेगत निष्ठा को दाँव पर लगाने से नहीं चूकते और मीडिया जैसे असरकारक साधन को बदनाम व विवादास्पद बना देते है। हम सभी भलीभांति परिचित हैं कि वर्तमान राजनीति विविध प्रकार के समीकरणों में फँसकर चंद अमीरों व बाहुबलियों की रखैल बन कर रह गई है और सरे आम लोकतंत्र के तत्व का मजाक बना रही है, चौराहों पर उसका मखौल उड़ा रही है। हमारी मंशा यह आरोपित करने की नहीं है कि मीडिया इसमें भागीदार है किन्तु इतना अवश्य काह जा सकता है कि यदि मीडिया ने अपने दायित्व का निर्वाह भलीभांति किया होता तो लोकतंत्र की तस्वीर इतनी खराब नहीं होती। मीडिया की आज जो भूमिका दिखाई देती है वह उसे संदेह के घेरे में ले आती है। तब प्रश्न उठता है कि कहीं मीडिया अपनी आजादी का सौदाकर करके अथवा अपनी अन्तरात्मा की आवाज को नजर अंदाज करके मीडिया अपनी नैतिक जवाबदारी से कटता तो नहीं जा रहा, अवसरवादियों की कतार में खड़ा होकर लोकतंत्र की बुनियाद को खोखला करने का सबब तो नहीं बन रहा? यही सब वस्तुस्थिति को विश्लेषणात्मक नजरिये से समझने को विवश कर रहा है विशेषकर भारतीय ग्रामीण परिवेश के संदर्भ में। विनोबाजी भूदान ग्राम व विश्व व्याख्यान में प्रकट करते हैं कि हमारी सम्पूर्ण व्यवस्था का आधार गांव है और उसके केन्द्र में विश्व सत्ता होनी चाहिए। लोकतंत्र में राज्यसत्ता के विकेन्द्रीकरण की प्रतीक हमारी ग्राम पंचायतें हैं जहाँ से सच्चे स्वराज की शरूआत की जा सकती है। आज ग्रामीण परिवेश में तत्व की दृष्टि से लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की आवश्यकता है क्योंकि इसके अभाव में व इसके प्रति उदासीनता के चलते वहाँ वह नहीं हो पा रहा है जिसकी अपेक्षा एक स्वस्थ लोकतंत्र में की जाती है। इसके कारण निम्न लिखित हैं-

लोकतंत्र की वर्तमान विकृतियों के लिए जिम्मेदार कारण-

1. अशिक्षा व लोक जागृति व लोकतंत्रीय जिम्मेदारी के निर्वाह हेतु व्यवस्थित क्षमता विकास व मानसिक क्रांति का अभाव- इसी के चलते लोग अपनी भूमिका निर्वाह के सही स्वरूप से वाकिफ नहीं हैं, अन्याय के प्रति सशक्त कदम उठाने की सूझ व साहस उनमें नहीं है।

2. शिक्षित व आलोचक वर्ग में सक्रिय भागीदारी से दूर भागने व लोकतंत्र की संचालन व्यवस्था में रचनात्मक सहयोग करने की मनोवृति का अभाव। विरोध के स्वर उठाने वालों में समाधान की दिशा में समुचित कदम उठाने की साहसवृत्ति बताकर आगेवानी नहीं लेना चाहते यही लोकतंत्र की बहुत बड़ी बिडम्बना है।

3. लोक सेवा की जगह स्व-स्वार्थ की सिद्धि की ओर लोकनायकों का बढ़ता रूझान व भेड़चाल- इससे लोकतंत्र की जड़े खोखली हुई हैं। जो भी आता है वह उसमें योगदान करने की बजाय उसमें में खसोट कर ले जाने की फिराक में लगा रहता है।

4. कुर्सी से चिपके रहने की मनोवृत्ति के चलते दूसरी पीढ़ी में सक्षम व समर्पित नेतृत्व तैयार न कर पाना- चुनकर आये नेता येन केन प्रकारेण कुर्सी से चिपके रहना चाहते है। उनकी लालसा अंतहीन बन जाती हैं, उनकी स्वार्थी महत्वाकांक्षाओ के समक्ष लोकहित बोने हो जाते हैं। वे अहम, मान-प्रतिष्ठा पाने व आर्थिक भ्रष्टाचार को पनपाने के लालच में दूसरी पीढ़ी में नेतृत्व को सही रूप से विकसाना नहीं चाहते।

5. जातिगत-वर्गगत दखलंदाजी, दबाव व अनाधिकृत कुचेष्टाएं तथा भ्रमित समाज- अराजकतत्वों, बाहुबलियों, धन कुबेरों और असरकारक स्वार्थी घटकों की बढ़ती दखलंदाजी व अनाधिकृत कुचेष्टाएं लोगों को पथ भ्रष्ट व पथ भ्रमित कर रही हैं। औपचारिक व अनौपचारिक लोकतंत्रीय व्यवस्था से जुड़े हर साधन-संसाधन पर इनका कब्जा है जो लोकतंत्र की निष्पक्षता व परिणामों की फलश्रुति को विपरीत दिशा में प्रभावित करता है।

6. लोगों को आर्थिक प्रलोभनों का मायाजाल में फँसाकर उन्हें लोकतंत्रीय दायित्वों के निर्वाह से दूर रखने की बढ़ती जाती स्पर्धात्मक कवायद- हर दल इस मुहिम में बढ़चढ कर आज हिस्सा ले रहा है और लोकतंत्रीय वातावरण को प्रदूषित कर रहा है।

लोकतांत्रिक विकन्द्रीकरण व मीडिया की भूमिका को असरकारक बनाने की दिशा में गांधी विचार प्रेरित विमर्श-

गांधीजी ऐसी समाज रचना के हिमायती नहीं थे जो केवल भौतिक मूल्यों की बुनियाद पर खड़ी हो। इसलिए उन्होंने ग्राम स्वराज्य को अपनाने की वकालत की जो सच्चे अर्थ में सभ्यता के मायने को साकार कर सकता था। गांधीजी का लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण में अटूट विश्वास था। उनकी ग्राम स्वराज की कल्पना पुरानी ग्राम पंचायतों को पुनर्जीवन देने की बात नहीं अपितु आधुनिक जगत को ध्यान में रखते हुए स्वराज्य के स्वतंत्र ग्राम घटकों की नई रचना करने की बात है। सही मायनों में यहाँ वैयक्तिक स्वतंत्रता अपना विस्तार पाती है और अहिंसक समाज रचना की ओर अग्रसर होती है। स्थायी विश्व शांति के लिए लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण अपरिहार्य है। हमारे वैदिक इतिहास में भी ग्राम व्यवस्था की बड़ी प्रशंसा की गई है। ब्रिटिश गवर्नर चार्ल्स मेटकाफ ग्रामों को ऐसे छोटे छोटे प्रजातंत्र के रूप में देखता है जहाँ उसे अपनी हर जरूरत की वस्तु मुहैया हो जाती है।सही है लोकतंत्र वह व्यवस्था है जिसमें रहकर जनप्रतिनिधि अपने लोगों की जरूरतों को पूरा करने का रास्ता सहज बनाते हैं, उनकी सुख समृद्धि व आन्तरिक खुशी में इजाफा करते हैं। कहने का आशय यह है कि राजनीति को सामान्य जन जीवन के आदर्श से अलग हटकर नहीं देखा जा सकता इसीलिए गांधीजी समग्र व्यवस्था में राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक पक्ष को सामिल करते हैं। वे मानते थे कि "ग्राम स्वराज्य में राज्य का अंत नहीं होता अपितु राज्य का विकेन्द्रीकरण होता है। गांधीजी चाहते थे कि भारत में सच्चे लोकतंत्र की स्थापना हो। इसलि उन्होंने कहा था कि सच्चा लोकतंत्र केन्द्र में बैठए हुए 20 व्यक्तियों द्वारा नहीं चलाया जा सकता। उसे प्रत्येक गांव के लोगों को नीचे से चलाना होगा।" उनकी राय में सच्चा लोकतंत्र अर्थात् स्वराज्य व्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता और विकास के लिए कार्य करता है, यह व्यक्ति ही किसी सच्ची राजनीतिक पद्धति का अंतिम प्रेरक बल होता है। ग्राम स्वराज्य गांधीजी की कल्पना का एक सच्चा और शक्तिशाली लोकतंत्र है। जिस भावना से ग्राम स्वराज की कल्पना की गई है उसी भावना से उस पर अमल भी होना चाहिए। जिन लोगों के हाथ में ग्राम पंचायतों के संचालन की जिम्मेदारी होगी उनके भीतर यदि निः स्वार्थ सेवा और जाति धर्म या वर्ग की मर्यादाओं से परे रहने वाली प्रेम की भावना नहीं होगी, तो हमे ग्राम स्वराज्य के मीठे फल चखने को नहीं मिलेंगे जिनकी अपेक्षा गांधीजी ने की थी। लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण और मीडिया की भूमिका के संदर्भ में गांधीजी के आचार-विचारों का अवलोकन करें तो हम पायेंगे उन्होंने मीडिया, लेखन, प्रेस को जनता की आवाज बनाया, नर्भीकता व सत्याग्रह की मीमांसा के साथ समाज के समक्ष रखा भले ही वह दक्षिण अफ्रीका की बात हो या फिर हिन्दुस्तान की। उनके हर शब्द में पूर्ण विवेक था, सभी के प्रति करुणा थी, दया थी, विनम्रता थी, अद्भुत साहस था, विरोधियों के प्रति भी प्रेम था, अपनी आत्मशुद्धि का विचार था, सामूहिक चेतना की

संवेदना थी तथा दरिद्रनारायण के उत्थान के प्रति श्रद्धा व उत्साह की अभिलाषा थी ताकि अहिंसक लोकतंत्र की विभावना आकार ले सके। गांधी विचार के आलोक में निम्न लिखित कदम लोकतंत्र की सीरत व सूरत सुधारने में अपना महत्वपूर्ण योगदान सुनिश्चित कर सकते हैं।

1. **बहुमत के बावजूद न्यायोचित अल्पमत को प्रधानता-** बहुमत की नगाड़े की अवाज में न्यायोचित अल्पमत की तूंती की अवाज दबनी नहीं चाहिए क्योंकि लोकतंत्र की सफलता तभी मानी जा सकती है जब उसमें सच को स्थान मिलने की गुंजाइश सदैव बनी रहे।
2. **दलबंदी \ गुटबंदी से लोकतंत्र की दूरी-** लोकतंत्र को गंदी राजनीति और दलबंदी से दूर रहना चाहिए। किसी भी हालत में समाज का बँटबारा नहीं होना चाहिए। सभी लोगों को मिलाकर, साथ लेकर चलाने की इच्छाशक्ति लोकतंत्र संचालन की व्यवस्था में होनी चाहिए जिसमें जन सहयोग अपेक्षित है।
3. **लोकतंत्र के आचार में सामाजिक समरसता का तंत्र-** लोकतंत्र के जरिए सामाजिक समरसता, शांति व सौहार्द का वातावरण निर्मित होना चाहिए, मनभेद व मतभेद तथा अश्पृश्यताजनित व्यवहार दूर होना चाहिए तभी स्वस्थ लोकतंत्र की स्थापना हो सकती है।
4. **नेतृत्व करे अनासक्ति के सिद्धान्त पर अमल-** लोकतंत्र जन सेवा का माध्यम बने और उसमें विकृतियां न पनपें भावी पीढ़ी भी नेतृत्व संभालने के लिए कुशलता हांसिल कर सके इसके लिए वर्तमान नेतृत्व को गीता में वर्णित अनासक्ति के सिद्धान्त पर अमल करना जरूरी होगा। यदि हम लोक दायित्व को निजी व वंशानुगत अधिकार की तरह परिभाषित करेंगे तो विकृतियां पनपेंगी ही।
5. **दिशा बदलो-दशा बदलो-** अच्छे लोग राजनीति से जुड़े और वे आलोचना व दोष दृष्टिकोण से परे हटकर विकासलक्षी सोच को अपनाएं तो लोकतंत्र का वर्तमान माहोल निश्चित तौर पर बदला जा सकता है। स्वच्छ राजनीति व व्यवस्था की स्थापना व संचालन हेतु समग्र व्यवस्था को कुशल एवं पारदर्शी बनाना भी जरूरी है।
6. **क्षमता वर्धन के द्वारा सभी को इस व्यवस्था में जुड़ने के अवसर-** लोगों को इनके शासन संचालन व्यवस्था से यह मानकर दूर नहीं रखा जा सकता कि उनमें ऐसा करने की योग्यता अथवा सामर्थ्य नहीं है। अपितु उन्हें क्षमतावर्धन के द्वारा और अवसर प्रदान करके लोकतंत्र का सुव्यवस्थित ढांचा तैयार किया जा सकता है जिसमें वे अपने लोकतांत्रिक दायित्व का निर्वाह सहजता से कर सकते हैं।
7. **अभय, सर्वधर्म समभाव एवं अश्पृश्यता निवारण व्रत का प्रयोग-** गांधीजी ने मंगल प्रभात में समाजकल्याणलक्षी अभय, सर्वधर्म समभाव एवं अश्पृश्यता निवारण व्रत को अपनाने का आवाहन किया है ताकि अहिंसक समाज रचना आकार ले सके। इससे जन समुदाय में मानवीय मूल्यों का विकास होगा और सच्चे लोकतंत्र के स्वपन को साकार करने हेतु ऐसा वातावरण निर्मित हो सकेगा जिससे लोकतंत्र की जमीन को मजबूती मिलेगी।
8. **लोक नेतृत्व में गुणात्मक विकास हेतु सत्य अहिंसा अस्तेय अपरिग्रह वगेरह व्रतों की प्रासंगिकता-** लोक नेतृत्व यदि सत्य अहिंसा अस्तेय अपरिग्रह आदि गुण को आत्मसात कर लेता है तो लोकतंत्र अपने आत्मारूपी 'तत्व' के निहितार्थ को चरितार्थ व सार्थक कर सकता है।
9. **लोकतंत्र ही सशक्त अहिंसक समाज रचना का माध्यम-** प्रजातंत्र का उद्देश्य ऐसी समाज रचना का निर्माण करना है जिसमें सभी लोग फलफूल सकें, जिसमें किसी एक के विकास की असर दूसरे के अहित के रूप में न पड़ती हो, जिसमें लोग अधिकार की मांग से पहले कर्तव्य निर्वाह के प्रति सजग रहते हों और राष्ट्रीय विकास की मुख्यधारा का अहम हिस्सा बनते हों। इस दिशा में गांधीजी हरिजन में निर्देशित करते हैं कि "अहिंसा आधारित स्वराज में लोगों को अपने अधिकारों का ज्ञान न हो तो

कोई बात नहीं, लेकिन उन्हें अपने कर्तव्यों का ज्ञान अवश्य होना चाहिये। किसी राष्ट्र या समाज के स्वराज का अर्थ उस समाज के विभिन्न व्यक्तियों के स्वराज का योग ही है। अहिंसा आधारित स्वराज में कोई किसी का शत्रु नहीं होता, सारी जनता की भलाई का सामान्य उद्देश्य सिद्ध करने में हर एक को अपना अभीष्ट योग देता है। इस व्यवस्था में किसी के अधिकारों का अतिक्रमण नहीं किया जाता"-

10. **मानवीय मूल्य आधारित मीडिया संचालन व्यवस्था-** मीडिया नफा नुकसान के गणित पर चलने वाला व्यवसाय नहीं हो सकता। उसमें ऐसी सेवा का भाव होना जरूरी है जिसमें मानवीय मूल्यों की सुवास हो तथा लोकहित व राष्ट्र हित की सर्वोपरिता हो, अपने निहित स्वार्थ की सिद्धि या अल्पख्याति के लिए जनतांत्रिक हितों की अवहेलना न होती हो, जिसकी तंत्र की अनियमितताओं पर सदैव चौकन्नी नजर रहती हो और तदानुरूप लोक जागृति का अलख जगाने की तत्परता हो, क्योंकि मीडिया एक सेवाकीय पेशा है और उसकी जिम्मेदारी लोकतंत्र व समुदाय के प्रति विशिष्ट हो जाती है।
11. **लोकतंत्र में साधन शुद्धि का विचार-** गांधीजी कहते हैं कि "मेरी कल्पना का स्वराज तभी आयेगा जब हमारे मन में यह बात अच्छी तरह जम जाय कि हमें अपना स्वराज सत्य और अहिंसा के शुद्ध साधनों द्वारा ही प्राप्त करना है, उन्हीं के द्वारा हमें उसका संचालन करना है और उन्हीं के द्वारा हमें उसे कायम रखना है। सच्ची लोकसत्ता या जनता का स्वराज्य कभी भी असत्यमय और हिंसक साधनों से नहीं आ सकता। यदि असत्यमय और हिंसक साधनों का प्रयोग किया गया, तो स्वाभाविक परिणाम यह होगा कि सारा विरोध या तो विरोधियों को दबाकर या उनका नाश करके खतम कर दिया जायेगा। ऐसी स्थिति में वैयक्तिक स्वतंत्रता की रक्षा नहीं हो सकती। वैयक्तिक स्वतंत्रता को प्रगट होने का पूरा अवकाश केवल विशुद्ध अहिंसा आधारित शासन में ही मिल सकता है।"
12. **लोकतंत्र नोकरशाही का मातहत न बन जाय-** लोकतंत्र पर नोकरशाही हावी न हो, लोकहित में इस पर बाज नजर रखना जरूरी है। जिसमें मीडिया सशक्त व असरकारक भूमिका निभा सकता है। जैसा कि गांधीजी का मानना था कि आजाद हिन्दुस्तान में लोगों की महेरबानी पर हाकिमों को रहना होगा, उन्हें लोगों का सेवक बनकर उनकी मन मर्जी के मुताबिक काम करना होगा। ऐसी तस्वीर आजाद भारतीय लोकतंत्र की होनी चाहिए। राजनीति को राज या राष्ट्रधर्म व समाजसेवा के रूप में निरूपित करना जरूरी है ताकि लोकतंत्र का मखौल न बन जाय अथवा शक्तिशाली लोगों की इस तंत्र पर अनाधिकार कुच्ष्टाएं अनियंत्रित न बन जाएं।

उपसंहार-

भारत गांवों का देश है। विकास के नाम पर बढ़ते शहरीकरण के बावजूद अभी भी आधी से ज्यादा आबादी आज भी गांवों में निवास करती है तथा शहरी आबादी भी अपनी बुनियादी जरूरतों की संतुष्टि के लिए गांव पर ही निर्भर है। इसलिए भारतीय प्रजातंत्र में ग्रामीण विस्तार के प्रजातंत्र को मजबूत करने की अधिक आवश्यकता है। ग्रामीण प्रजातंत्र का मतलब है कि हर गांव अपने पैरों पर खड़ा होगा, उसके पास पूरी ताकत व सत्ता होगी और वह खुद ही अपनी जरूरतें पूरी करेगा। इन लोगों के हाथ में प्रजातंत्र की बागडोर सौंपे बिना वास्तविक विकास की कल्पना को साकार नहीं किया जा सकता और यह तभी संभव है ग्रामीण प्रजातंत्र की हर व्यक्तिगत इकाई अर्थात ग्राम सभा का हर सहस्य तालीमबद्ध हो, तंत्र की चुनौतियां का सामना करने के लिए सक्षम बने और फिर सक्रिय व रचनात्मक भागीदारी करके स्थानीय व राषअट्रीय विकास की मुख्यधारा में जुड़ सके। मीडिया की भूमिका ऐसे में अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है जब इस स्तर पर अशिक्षा, जाति-वर्गगत गुटबंदी का बोलबाला हो, स्वार्थी ताकतें लोगों को भ्रमित करने में सक्रिय हो चुकी

हों। मीडिया का कार्य न सिर्फ जागृति लाना अपितु अन्याय के महासमर में लोगों को लोकतांत्रिक दायित्वों के निर्वाह के लिए लोगों को सज्ज करना भी है ताकि प्रजातांत्रिक मूल्यों की रक्षा हो सके।

निश्चित यह दशा मीडिया को दिशा बदलने का संकेत दे रही है। उस पथ पर लौटने का आवाहन कर रही है जिसमें लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा एवं जनहित की सुवास हो, आमजन को मजबूत करने की कशिश हो तथा अन्याय के सामने आवाज उठाने का नैतिक बल का दृढ़ संकल्प व इच्छाशक्ति हो। मीडिया लोगों की अथवा सच्चे जनतंत्र की आवाज बनकर उभरे इसके लिए उसे अपने में ऐसे आदर्श को जीवंत बनाए रखने की जरूरत हो जो उसकी असरकारक भूमिका निर्वाह हेतु प्रेरणास्पद बन सके। हम इस दिशा में बहुचर्चित व्यक्तित्व महात्मा गांधीजी को उनके आचार-विचार को वर्तमान प्रासंगिकता की कसौटी पर कसकर देख सकते हैं। गांधीजी का व्यक्तित्व व कृतित्व एक निर्भीक कलमकार, सत्यान्वेषी तथा अहिंसक समाज रचना के पक्षधर कर्मठ सिपाही के रूप में सामने उभर कर आता है, जो ता उम्र पूर्ण दृढ़ता के साथ आमजन की बात अपनी बात के रूप में निडरता के साथ समाज के सामने रखता रहा और न तो वह अन्याय के सामने झुका और न ही किसी भी परिस्थिति में अन्याय का समर्थन किया। उन्होंने गांव को प्रजातंत्र की इकाई माना और लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण में पूर्ण श्रद्धा के साथ उसे अमली जामा पहनाने के विचार को दृढ़ता के साथ रखा। उनका स्पष्ट मत था कि 'सत्ता' महत्वाकांक्षा संतुष्टि का माध्यम नहीं अपितु निःस्वार्थ समाज सेवा का मकसद बननी चाहिए। लोकतंत्र का वातावरण ऐसा होना चाहिए कि स्वशासन की व्यवस्था तक आमजन की न सिर्फ सीधी पहुंच हो अपितु उस पर योग्य अंकुश लगाने का नैतिक बल भी हो, लोग सक्रिय व रचनात्मक रूप इस व्यवस्था के साथ जुड़ें तभी यह तंत्र विकास पटल पर अपनी वास्तविक भूमिका को रचनात्मक बना सकता है और सच्चे स्वराज के स्वप्न को साकार कर सकता है। आज जरूरत है फिर से प्रजातंत्रीय सभ्यता को समझने व उसे समाज में स्थापित करने हेतु संवेदनशील व मानवीय मूल्य आधारित मीडिया संचालन व्यवस्था की जो गांधी विचार प्रेरित अहिंसक क्रांति का आगाज करके लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की बुनियाद को मजबूती प्रदान कर सकता है।

संदर्भ

- **I.** मोहनदास करमचंद गांधी- ग्राम स्वराज, नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद
- **II.** मोहनदास करमचंद गांधी- हिन्द स्वराज, नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद
- **III.** मोहनदास करमचंद गांधी- मंगल प्रभात, नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद
- **IV.** गांधीजी- हरिजन, 25.3.39, पृ. 64, 65
- **V.** गांधीजी- हरिजन, 25.3.39, पृष्ठ- 143
- **VI.** गांधीजी- हरिजन सेवक
- **VII.** गांधीजी- यंग इंडिया
- **VIII.** विनोबा- भूदान व्याख्यान, 8.9.62
- **IX.** (डॉ.) जैन लोकेश एवं पटेल राजीव (2005)- सर्वागींण विकास हेतु ग्रामीण क्षेत्र में विद्यमान नेतृत्व के स्वरूपों की असरकारकता का समीक्षात्मक अध्ययन, ग्रामीण विकास समीक्षा, जुलाई - दिसम्बर-2005, राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान हैदराबाद. पृष्ठ- 33-42

X. (डॉ.) जैनलोकेशएवंपटेलराजीव (2005)- प्रभावी सम्पेषण प्रबंध हेतु अवरोधक घटकों की पहचान एवम उनका निराकरण, ग्रामीण विकास समीक्षा, जुलाई - दिसम्बर- 2005, राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान हैदराबाद. पृष्ठ- 101-109

XI. (डॉ.) जैनलोकेश (2006)- सम्पोषित ग्रामीण विकास में जनसहभागिता के सृजन व संवर्धन हेतु सामुदायिक शिक्षण के स्वरूप एवं भूमिका का विश्लेषण, राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान हैदराबाद. जुलाई- दिसम्बर. 2006 पृष्ठ65-72.

****

डॉ. लोकेश जैन
प्राध्यापक
ग्राम व्यवस्थापन अध्ययन केन्द्र
गूजरात विद्यापीठ
गांधीनगर

Copyright © 2012 – 2017 KCG. All Rights Reserved. | Powered By: Knowledge Consortium of Gujarat